''लैल-तुल-कद्र''

ऐसी साहेदियां कई, हैं बीच अल्लाह कलाम ।
सब बातें एही लिखी, अब सब पढ़ेंगे इसलाम ॥१॥

कुरान में इस प्रकार की कई गवाहियां लिखी हैं । उन सब में मोमिनों की हकीकत है । उनके भेद खुल जाने से सब लोग श्री निजानन्द सम्प्रदाय को सही रूप से समझ लेंगे ।

ए जो किस्से कुरान के, अलफ लाम मीम से लेकर ।
सो जहां लो खतम हुआ, सिपारे आम लो एही खबर ॥२॥

कुरान में पहले सिपारे ''अलफ लाम मीम'' से लेकर अन्तिम ''आम सिपारे'' तक मोमिनों का ही जिक्र लिखा है ।

छत्तीसमी सूरत लों, कुल अऊज बिरब्बनास ।
जहाँ कुरान खतम हुआ, सब किस्से मोमिनों के खास ॥३॥

कुरान की आखिरी ३६वीं सूरत ''कुल अऊज बिरब्बनास'' जहां तक कुरान सम्पूर्ण होता है, वहां तक मोमिनों के साथ होने वाली घटनाओं का बेवरा है ।

ए साहिदी इन्ना इन्जुलना, लिखी बीच इन सूरत ।
रसूल साहिब बातां करते, आगे असहाबों के इत ॥४॥

''इन्ना इन्जुलना'' सूरत में यह प्रसंग गवाही के रूप में लिखा है कि महंमद साहब अपने साथियों से इन प्रसंगों पर चर्चा कर रहे थे ।

एक गाजी बनी असराईल नें, लोहा बांधा महिनें हजार ।
बीच राह खुदाए के, तरफ परवरदिगार ॥५॥

महंमद साहब ने अपने यारों से कहा कि असराईल पैगम्बर के बेटों में से एक ने खुदा की राह पर एक हजार महीने तक लड़ाई की परन्तु थका नहीं ।

तब यार ताज्जुब भये, या रसूल अलेहु सलाम ।
हम छोटी उमर से, क्यों पहुंचे इसलाम ॥६॥

तब उनके साथियों को आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि हे महम्मद साहब ! हम छोटी उम्र वाले खुदा की राह पर कैसे कुर्बान हो सकेंगे ।

Nijanand App

एह सकस कौन था, जिनका एह मरातब ।
तब जवाब रसूलें दिया, जबराईल एह सूरत लाया तब ॥७॥

उन्होंने ये पूछा कि हजार महीने तक राहे खुदा पर लड़ने वाला व्यक्ति कौन था, जिसको इतना बड़ा दर्जा मिला । तब रसूल साहब ने जो उत्तर दिया वह जबराईल द्वारा लाया हुआ ''सूरे कद्र'' था ।

आयत : अिन्ना अन्जलनाहु फी लैलतिल कदरि (१)
व मा अद्राक मा लैल तुल कद्रि (२)
लैल तुल कदरि खैरूम मिन् अल्फि शहरिन् (३)
तनज्जलुल- मलाअिकतु वर्रूहु फीहा बिअजनि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् (४)
सलामुन हिय हत्ता मतलअिल फजरि (५)

(कुरान, आम सिपारा ३०, सूरत ३६)

खुदा ने कुरान के तीसवें सिपारे में लिखा है कि मैंने यह तारतम ज्ञान ''कद्र की रात'' से उतारना शुरू किया और तुम क्या जानों की ''कद्र की रात'' क्या है । कद्र की रात हजार महीनों से बढ़कर है। उसमें रूहें और फरिश्ते (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि) अपने परवरदिगार के हुकम से जमीन पर उतरते हैं। वह रात फजर होने तक सलामत ही रहती है ।

मायने : मैं उतारे बीच रात के, करो तुम विचार ।
किए साथ लैल तुल कदर में, ब्रज रास में विहार ॥८॥

ए मोमिनों ! मैंने तुमको लैल-तुल-कद्र की इस रात में अर्श से इस जमीन पर उतारा है । तुम इस पर विचार करो । ब्रज और रास की लीला में तुमने मेरे ही साथ आनन्द की लीला का विहार किया था।

फेर तीसरे लैल तुल कदर कही, सो तीसरा तकरार ।
हजार महिने से बेहतर, बांधे इने हथियार ॥९॥

इस लैल-तुल-कद्र के तीसरे तकरार में, जिसे जागनी का ब्रह्माण्ड कहते हैं, जो हजार महीने से भी ज्यादा है, ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी ने दज्जाल से युद्ध करके मोमिनों को माया से निकाल कर धनी की पहचान कराई ।

हजार महिने के तेरासी बरस, भए महिना ऊपर चार ।
इन तें कहे बेहेतर, ताको मोमिन करो बिचार ॥१०॥

हजार महीने के ८३ वर्ष और ४ महीने होते हैं पर यह रात्रि इनसे भी बड़ी है, जिसका मोमिन ही विचार करेंगे ।

Nijanand App

इनों लोहा बांधिया, एक सौ बीस बरस ।
दो नाजी गिरोह नाजल भई, आई उतर अजीम अरस ॥११॥

ईसा रूह अल्लाह सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र और ईमाम मेंहेदी श्री प्राणनाथ जी ने १६३८ से १७५१ तक (कुरान के अनुसार १२० साल इस प्रकार पूरे होते हैं क्योंकि उनका साल ३५० दिन का होता है) दज्जाल से कमर कस कर युद्ध किया । अर्शे अजीम परमधाम से ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि इस खेल में उतरी हैं ।

एक गिरोह मलायक नूर से, आई रूहें अरस अजीम ।
तामें सिरदार तीनों सूरत, कही अलिफ लाम मीम ॥१२॥

एक गिरोह अक्षर की ईश्वरी सृष्टि है और दूसरी १२,००० रूहें अर्शे अजीम परमधाम से उतरी हैं और इसमें खुद अल्लाह ताला ने तीन बार तन धारण कर काम किया है और वे तीनों सूरतें ही इन दोनों गिरोहों के सिरदार हैं और उसी को कुरान के पहले सिपारे में अलफ, लाम और मीम कहा है । जिन्हें बसरी, मलकी और हकी सूरत कहते हैं ।

नव सै नब्बे नव मास से, रूह अल्ला जनम का नाम ।
तहाँ से एक सौ बीस बरस लों, लड़ाई करी तमाम ॥१३॥

महंमद साहब के बाद नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने बीतने पर सम्वत् १६३८ में रूह अल्लाह श्यामा महारानी, श्री देवचन्द्र के तन में प्रगट हुई । सम्वत् १६३८ से लेकर १२० वर्ष तक दज्जाल को फतेह करके खुदाई इलम श्री कुलजम स्वरूप को उतारा और मोमिनों को सारी दुनियां में जाहिर कर दिया ।

इन लड़ाई के बीच में, मोमिन मुतकै दरम्यान ।
लड़ाई करी दज्जाल सों, लेकर दृढ़ ईमान ॥१४॥

यह लड़ाई ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और दज्जाल के बीच हुई । ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि ने श्री प्राणनाथ जी की पहचान करके दृढ़ ईमान के साथ दज्जाल से लड़ाई की ।

तिन लड़ाई के किस्से कुरान में, लिखके भेजे हक ।
सो खोलें अपने आप ही, या तीन सूरत रसूल बुजरक ॥१५॥

मोमिनों और दज्जाल के बीच जो लड़ाई हुई, इन सब की हकीकत अल्लाह ताला ने कुरान में किस्सों के रूप में लिख कर भेज दी थी । इसलिए कुरान के उन गुझ भेदों को मोमिन ही खोलेंगे या महंमद साहब की ही तीनों बसरी, मलकी और हकी सूरते खोलेंगी ।

Nijanand App

रसूल मुहम्मद रूह अल्ला, और मेंहदी इमाम ।
ए चारों एकै तन हैं, ताको नाम इसलाम ॥१६॥

रसूल महंमद साहब (हुकम के स्वरूप) रूह अल्लाह मेंहेदी तथा ईमाम यह चारों एक ही तन के अन्दर बिराजमान हैं । इसी को श्री निजानंद सम्प्रदाय दीने इस्लाम कहते हैं ।

इन सेती जुदा पड़े, सोई है मुसरक ।
जो कोई इनों से लड़े, सोई दज्जाल बेसक ॥१७॥

जो इन चारों से मुनकरी करता है वही काफिर है और जो इनसे लड़ाई करता है वही दज्जाल का रूप है ।

उतरी गिरोह अरस से, इनों के रब हुकुम ।
कुल आमर इसलाम की, दई हक सुभान इन कुम ॥१८॥

मोमिनों (ब्रह्मसृष्टि) का गिरोह अर्शे अजीम से अपने खुदा श्री राजजी महाराज के हुकम से खेल में उतरा है । खुदा ने अपनी कुल न्यामतें इस जमात को बख्शी हैं ।

जहाँ लों इनकी आमर, सो अखण्ड होए हैयात ।
सो लैल मेट फजर करें, सो पहुंचे असल जात ॥१९॥

इन मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के हुकम से ही सारा ब्रह्मांड अखंड होगा । मोमिन ही दुनियां के घोर अज्ञान रूपी अंधकार को तारतम के ज्ञान रूपी सूर्य से मिटा देंगे और वे अपने अखंड घर परमधाम में पहुंचेंगे।

इन लैल को सब कोई, ढूंढत चौदह तबक ।
सो किने न पाई आज लों, सो मोमिन खोलें मेहर हक ॥२०॥

इस लैल-तुल-कद्र की रात को सारे काजी मुल्ला आज दिन तक ढूंढ रहे हैं पर कोई भी इसका भेद नही पा सका, जिसके भेद अपने खुदा श्री राजजी महाराज की मेहेर से मोमिन खोल कर जाहिर कर देंगे।

सबों पहुंचाए कदमों, खोलें भिस्त के द्वार ।
सब दौड़ी खलक टिड्डी ज्यों, तिनों पाया परवरदिगार ॥२१॥

ये मोमिन ही सारी दुनियां को तारतम ज्ञान से पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत की पहचान करायेंगे और चौदह तबक के जीवों के लिए अखंड बहिश्तों के द्वार भी ये ही खोलेंगे । तब सारी दुनियां टिड्डी दल की तरह दौड़ कर आयेगी और श्री प्राणनाथ जी के दर्शन करेगी ।

Nijanand App

एही सिफत मोमिनों की, सो आवत नही जुबान ।
कह कह के केता कहूं, नहीं ताकत सुनने कान ॥२२॥

मोमिनों की इतनी भारी महिमा का बयान इस जुबां से नही किया जा सकता । कह कह कर भी कितना कहूं, इस महिमा को सुनने की ताकत किसी के पास भी नही है ।

देख अपनी आँख सों, सब पुकारेगी आम ।
उठा परदा मुँह मुसाफ से, सबों खोले अल्ला कलाम ॥२३॥

सारी दुनियां अपनी आंखों से देख कर यह पुकारेगी कि मोमिनों ने जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से कुरान के सारे भेद जाहिर कर दिए हैं और सबके सामने छिपे भेद खोल दिए हैं जिसका ज्ञान सब को हो जायेगा ।

जुध किया दज्जाल ने, जाहिर हुआ सोए ।
तुमसों मैं केता कहों, अब सब में जाहिर होए ॥२४॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी ! मुझे और परमधाम को जाहिर करते वक्त दज्जाल ने जो युद्ध किया वह अब सब दुनियां के सामने जाहिर हो गया ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, नेक साहिदी दई तुम ।
अब तुमको बीतक कहों, तुम याद करो मिल कुम ॥२५॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! ये कुरान में लिखे निशानों की थोड़ी सी गवाही मैंने दी है । अब आगे की बीतक कहता हूं । सब सुन्दर साथ मिलकर उसे याद करें ।

(प्रकरण ४५, चौपाई २२६१)

अब तुम सुनियो मोमिनों, कहों जो बीतक तुम ।
लड़ाई करी दज्जाल सों, जमा एक ठौर थे हम ॥१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब तुम उस वृत्तान्त को सुनो कि तुमने जिस तरह से दज्जाल से लड़ाई की । श्री लालदास जी सहित वहां बारह मोमिन नजरबन्द थे ।

जब सरे तोरे को, हम ले गए पैगाम ।
तब ढांका जिन गिरोह नें, मरातबा इमाम ॥२॥

जब हम शरीयत के मालिक औरंगजेब के पास ईमाम मेंहदी साहब का पैगाम लेकर गए तब जिन शरीयत के गुलाम कर्मकाण्डी लोगों ने ईमाम मेंहदी की साहेबी को जाहिर नही होने दिया और दिल में मुनकरी लेकर दज्जाल का साथ दिया ।

Nijanand App

खुदा लानत है जिनको, तापर फिरस्ते फेरे लानत ।
सब मोमिनों की लानत, हुई बखत कयामत ॥३॥

ऐसे गुन्हेगार लोगों पर खुदा की लानत है और कयामत के समय फरिश्तों की लानत होगी । सब मोमिनों का धिक्कार भी उन पर होगा ।

सब आम लानत देवहीं, जिन इस इसलाम ।
हुई ख्वारी सब में, पुकारत खलक तमाम ॥४॥

जो इस्लाम के मुल्ला काजी लोग थे, उन्होंने पैगाम को ठुकराया है तथा ईमाम मेंहदी से विमुख हुए हैं, ऐसे इन्कार करने वालों को संसार के सभी लोग धिक्कारेंगे । बेईमान लोग आपस में लड़-लड़ कर नष्ट हो जाएंगे । ऐसा सारी दुनियां जानती है ।

लिखी सिपारे दूसरे, सयकूल जाको नाम ।
दज्जाल बैठा दिल पर, भानी राह इसलाम ॥५॥

कुरान के दूसरे सयकूल सिपारे में खुदा ने लिखा है कि दज्जाल अबलीस (नारद) सब दुनियां के लोगों के दिल पर बैठा है तथा श्री निजानन्द सम्प्रदाय, दीने इस्लाम की राह में रूकावट डालता है ।

सब खलक राह पावती, जो ए फेरत ना पैगाम ।
दीदार होता दुनी को, पढ़ों भान दिया वह काम ॥६॥

कुरान के पढ़े लिखे आलम फाजल जो अपने अहंकार में डूबे थे, अगर वे ईमाम मेंहदी साहब के पैगाम से मुनकरी नही करते तो सारी दुनियां को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के दर्शन हो जाते तथा सारी दुनियां को सत्य धर्म श्री निजानन्द सम्प्रदाय के मार्ग की प्राप्ति हो जाती ।

कानों तो बहरे कहे, भई आंखों ऊपर मोहोर ।
दीदे दिल अंधे कहे, तो सुन्या न एता सोर ॥७॥

राज्य और इलम के नशे में अन्धे लोग जो खुदा की तरफ से बहरे होते हैं, उनकी आंखों पर मुहर लगी होती है अर्थात् उनके पास आतम-दृष्टि नहीं होती है । उनके पास विवेकशील बुद्धि नहीं होती । उन्हें ईमाम मेंहदी के आने के बारे में मोमिनों ने इतना पुकार करके सुनाया भी लेकिन उन्होंने उसे नहीं सुना ।

Nijanand App

मोमिन फरज उतारिया, पहुंचावते पैगाम ।
हुआ मसरक मगरब जाहिर, सब सुन्या खलक आम ॥८॥

मोमिनों ने ईमाम मेंहदी साहब के आने तथा कयामत के जाहिर होने का पैगाम बादशाह तक पहुंचा दिया । मगर खुदा के ठेकेदार, जिनके पास खुदाई इलम कुरान था, उनको परमधाम के अखण्ड ज्ञान के सूर्य का तेज नजर नही आया अर्थात् उनके लिए अंधेरा रहा । वे पश्चिम की दिशा (मगरब) में ही रहे और हिन्दू लोग जो कुरान पर यकीन नही लाते थे, वे पहले मगरब की दिशा में बने हुए थे । श्री प्राणनाथ जी का ज्ञान हिन्दुओं के पास आने से वे मसरक (पूर्व) वाले हो गये, जिसकी जानकारी सारी दुनियां को हो गई ।

तो भी ए ना देखहीं, दज्जाल में नाहीं विचार ।
के हमसे क्या गया अरू क्या रहया, ए न हुए खबरदार ॥९॥

इतना होने पर भी मुसलमानों ने कुछ भी विचार नही किया क्यों कि इनके दिल पर शैतान (दज्जाल) बैठा हुआ था । इसलिए वे यह नही सोच सके कि हमसे क्या जा रहा है तथा क्या रह रहा है ? अर्थात् उन्होंने खुदा की बादशाही से मुनकरी कर दी तथा मान गुमान और अहंकार से भरी दुनियां को पकड़ बैठे । वे इसके लिए सावचेत नहीं हो सके ।

बेत अल्ला पुकारही, सो भी सुने न कान ।
वसीयत नामें चार आए, ताकी भी न करें पहिचान ॥१०॥

मदीना जिसको बैत अल्ला कहते हैं, उस मस्जिद की दो मीनारों के गिरने पर आवाज आई कि मुसलमानों! मदीने से शफकत, बरकत, कुरान और नूरी झंडा जबराईल यहां से लेकर हिन्द में ईमाम मेंहदी के पास चले गये हैं । यह उस समय हुआ जब कोतवाल ने मोमिनों पर कष्ट ढाया । तब मदीने से चार वसीयतनामे शरा तोरा के मालिक औरंगजेब पर आए, फिर भी उन लोगों ने पहचान नहीं की ।

प्रमाण : महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान ।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान ॥
(मारफत सागर १३/४०)

वास्ते मतलब दुनी के, छोड़ दिया इसलाम ।
पैगम्बर को पीठ दई, रहे बीच दुनी के काम ॥११॥

सांसारिक स्वार्थ के लिये उन्होंने इस्लाम धर्म की सच्चाईयों, जो कुरान में लिखी थीं, उनको भी ठुकरा दिया । वे ईमाम मेंहदी साहब के पैगाम से मुनकिरहो गए और दुनियां के ऐशोआराम को उन्होंने नहीं छोड़ा ।

Nijanand App

मोमिनों ऊपर कसाला, किया इनों ने जोर ।
उन लड़ाई के बखत में, किया दज्जाले सोर ॥१२॥

जब बारह मोमिन कोतवाल के हवाले थे तो कोतवाल ने न सहने योग्य कठोर यातनायें उन पर ढायी। मुल्ला और काजी जो दज्जाल का रूप बने हुए थे, उन्होंने बादशाह को भ्रमित कर दिया और पैगाम को ठुकरा दिया ।

तिस बखत हादीए ने, लिख भेजी पाती उत ।
सुनियो सो हकीकत, नेक कहों मैं इत ॥१३॥

ऐसे संकट के समय आप हादी श्री प्राणनाथ जी ने अपनी कलम से जो मोमिनों को पत्र लिखा था, उसकी हकीकत कहता हूं । उसे ध्यान से सुनिए ।

जब थे कोतवाल के हवाले, तब लिख भेजे खास कलाम ।
वास्ते दिलासा मोमिनों, जिन दलगीर होवे इन काम ॥१४॥

जब बारह मोमिन कोतवाल के हवाले थे और कोतवाल ने न सहने योग्य जलालत भरे कष्ट मोमिनों पर ढाए, उस समय मोमिनों को तसल्ली (धैर्य) देने के लिए श्री प्राणनाथ जी ने अपनी कलम से प्यार भरा पत्र लिखा, जिससे मोमिन दुःखी न हों ।

ऐ पेंगमर हक का, तुमे भेजे ऊपर इसलाम ।
तो इनों मारा पैगाम को, तो हुई लानत तमाम ॥१५॥

ईमाम मेंहदी साहब (अल्लाह तआला) श्री प्राणनाथ जी का पैगाम देकर तुमको दीने इस्लाम के कार्य के लिए भेजा था, पर इन काजी मुल्लाओं ने वह पैगाम बादशाह तक नहीं जाने दिया तथा ठुकरा दिया। इसलिए इनको सारी दुनिया की ओर से फटकार और लानत मिली ।

अब ए होत सरमिंदे, गरम होत दोजक ।
तुम पर मेहर हादीए की, है नजीक तुमारे हक ॥१६॥

अब वे लोग शर्मिंदा होंगे तथा उन्हें पश्चाताप की अग्नि में जलना होगा अर्थात् दोजख के कष्ट सहने पड़ेंगे । मोमिनों पर हादी श्री प्राणनाथ जी की सदा मेहर की दृष्टि है और सदा हक श्री राजजी महाराज उनके साथ हैं ।

तुम बैठे नजीक हक के, तुमें पलक न करें दूर ।
तुमारे मूल सरूप सों, जो हमेसा था मजकूर ॥१७॥

अर्श (परमधाम) के उस मूल मिलावे में तुम श्री राजजी के चरणों तले बैठे हो जहां एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज तुम्हें अपनी पलक से दूर नही कर सकते । तुम्हारी परआतम भी सदा श्री राजजी से इश्क रब्द करती रहती थी ।

Nijanand App

तिस वास्ते तुमको, अजमावत हैं इत ।
दिखाए बलाए कसाले, ए मुकदमा कयामत ॥१८॥

इसलिए श्री राजजी महाराज भी इस दुःख भरे संसार को दिखाकर तुम्हारी परीक्षा ले रहे हैं । इसलिए ईमाम मेंहदी साहब के आने तथा कयामत को जाहिर करने के लिए आपको इतनी मुसीबतें और दुःख सहन करने पड़ रहे हैं ।

जो लड़ाई तुम करी, सो होसी रोसन चौदह तबक ।
मौत दज्जाल की इन में, सो तुमहीं भानी सब सक ॥१९॥

पैगाम पहुंचाने के लिए जो तुमने कष्ट सहे हैं, वह सारी दुनिया के सामने जाहिर हो जाएंगे तथा सबके संशय मिट जाएंगे और दज्जाल की मौत भी इसी संघर्ष से होनी है अर्थात् दुनियां की अज्ञानता का नाश तुम्हारी कुर्बानी से ही होना है ।

ए भूले तुमको देख के, ले मायने ऊपर के ।
अबलीस रान्या इन से, ले ऊपर के अरथे ॥२०॥

मुसलमान लोग तुम्हें हिंदुओं के तन में देखकर भूल गये तथा अल्लाह तआला के पैगाम को ठुकरा दिया। उनको यह बात याद नहीं है कि अबलीस ने आदम के वजूद को देखकर उस पर सिजदा नहीं बजाया था, जिसके कारण उस पर लानत हुई ।

सूरत देखी आदम की, बीच निसबत थी हक ।
तासों रह्या गाफिल, हुई लानत ऊपर सक ॥२१॥

अबलीस ने आदमी की सूरत को देखा किन्तु उसके अन्दर खुदा की निसबत (मुहम्मद की रूह) को नहीं देखा इसलिए लापरवाही में रह गया, जिसके कारण उस पर लानत हुई ।

सो अबलीस सबों दिल पर, करत पातसाही ।
तो इलहाम फेरा हक का, दुस्मनी से आई ॥२२॥

वही अबलीस (नारद) शैतान के रूप में सब के दिलों पर बादशाह बनकर बैठा है । उसी के आधीन होकर इन लोगों ने खुदा के पैगाम को ठुकरा दिया क्योंकि अबलीस की आदमी की शक्ल से दुश्मनी है ।

जान बूझ आपको, बुरा न चाहे कोए ।
पर ए काम अबलीस के, मारी राह इसलाम की सोए ॥२३॥

नहीं तो कोई भी इन्सान जानबूझकर अपना बुरा नहीं चाहता है पर दिल में अबलीस की बैठक होने से उन लोगों ने श्री निजानन्द सम्प्रदाय, दीने इस्लाम के खुदाई पैगाम को ठुकरा दिया ।

Nijanand App

लिख्या लोमोफूज में, जो सेजदा आदम पर ।
सो अबलीसे ना किया, आप को बड़ा जान्या यों कर ॥२४॥

लोमोफूज अर्थात् खुदा की तरफ से कुरान में लिखा गया है कि अबलीस ने अपने को आदम से बड़ा फरिश्ता समझकर उस पर सिजदा नहीं किया तथा अन्दर बैठी खुदा की निसबत को नहीं पहचाना ।

सेजदा सब जिमी पर, किया ऊपर खुदाए ।
सो सारे सेजदे रद्द हुए, तोख लानत गले हुआ ताए ॥२५॥

वरना उसी अबलीस ने सारी दुनियां पर खुदा के नाम के सिजदे बजाए पर खुदा की निसबत की पहचान न करके सिजदा नहीं बजाया, जिससे सारे सिजदे रद्द हो गए तथा उसके गले में लानत की पट्टी पड़ गई ।

देखो कौन आदम कौन अबलीस, सब जिमी सेजदा किया तित ।
बची न दो अंगुल जिमी, सो कहां जिमी है इत ॥२६॥

विचार करके देखो कि कौन अबलीस है ? तथा कौन आदम है ? आसुरी स्वभाव रखने वाले अबलीस ने किस जगह पर सिजदे नहीं बजाए ? दो अंगुल भी जमीन बाकी न रही, वो कहां है ?

ए विचार देखो दिल से, कौन आदम बिना रसूल ।
सेजदा ना किया किननें, किन नें भान्या एह सूल ॥२७॥

अब तुम विचार करके देखो कि कौन लोग ऐसे हैं, जिनका ईमाम मेंहदी साहब पर यकीन नहीं है? किस ने खुदा के हुकम पर सिजदा बजाया तथा किसने ठुकराया ? अर्थात् अबलीस के रूप, पैगाम को ठुकराने वाले और आदम का रूप, श्री प्राणनाथ जी हुए ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, यह बीतक सरियत ।
हुए स्याह मुंह सरमिंदे, हुआ दौर कयामत ॥२८॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! ये बीतक शरीयत की कट्टरता से लड़ाई की है । कयामत के समय में उनके मुख काले रहेंगे और सारी दुनियां के सामने इनको शर्मिन्दा होना पड़ेगा ।

(प्रकरण ४६, चौपाई २२८९)

Nijanand App